विभिन्न प्रकार के परिवारों का किशोर-किशोरियो में व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'' (फैजाबाद (उ0प्र0) शहर के सन्दर्भ में)

अराधना श्रीवास्तव

शोधार्थी

गृहविज्ञान विभाग

शासकीय डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विज्ञान

और वाणिज्य डिग्री कॉलेज, भोपाल (म.प्र.) भारत

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि शहरी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विभिन्न परिवार के किशोर-किशोरियों ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विभिन्न परिवार के किशोर-किशोरियों की अपेक्षा अधिक व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव पाया गया, जबकि शहरी विद्यालय के किशोर-किशोरियों एवं ग्रामीण विद्यालय के में अध्ययनरत विभिन्न परिवार के किशोर-किशोरियों में व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव में कोई अन्तर नहीं पाया गया। निष्कर्ष रूप से यह भी पाया गया कि शहरी विद्यालय के किशोर एवं किशोरियों की व्यवसायिक चयन सम्बन्धित प्रभावशीलता ग्रामीण परिवार के किशोर एवं किशोरियों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

मुख्य शब्दः व्यवसायिक चयन, व्यवसायिक तनाव, व्यवसायिक

प्रभावशीलता।

प्रस्तावना

जीवन में उचित व्यवसाय के चयन द्वारा सुख शान्ति की स्थापना के लिए इसे रोजगारोन्मुखी बनाना अनिवार्य है, इसके लिए व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है, व्यवसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में लोग यह मानते है कि उसका उद्देश्य केवल पुरूषों को शिक्षा देना है, यह किसी भी दृष्टिकोण से सही नहीं है।

स्त्रियों को भी व्यवसायिक शिक्षा प्रदान कर उन्हे आत्मनिर्भर बनाना देश के विकास के दृष्टिकोण से अनिवार्य है, इसलिए व्यावसायिक शिक्षा के अन्तर्गत पुरूषों व स्त्रियों दानों को समान अवसर उपलब्ध करवाया जाता है।

चूँकि समाज एवं देश में समय के अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं, इसीलिए शिक्षा के उद्देश्यों में भी समय के साथ परिवर्तन होते हैं।

वर्तमान समय की आवश्यकता के अनुसार विज्ञान की शिक्षा, कार्यानुभव एवं व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जाना महत्वपूर्ण है, आधुनिक युग में मानव संसाधन के रूप में विकास में शिक्षा की प्रमुख भूमिका होती है।

उचित शिक्षा के अभाव में मनुष्य कार्यकुशल नहीं बन सकता, कार्यकुशलता के बिना व्यावसायिक एवं आर्थिक सफलता की प्राप्ति नहीं की जा सकती है।

समय समय पर शिक्षा को अधिक उपयोगी एवं इसके उद्देश्यों को अधिक सार्थक बनाने के दृष्टिकोण से विभिन्न शिक्षा आयोगों का गठन किया गया।

लगभग सभी शिक्षा आयोगों ने व्यवसायिक शिक्षा के महत्व को स्वीकार करते हुए इससे सम्बन्धित सुझाव दिए दौलतसिंह कोठारी की अध्यक्षता वाले भारतीय शिक्षा आयोग ने भी यह माना कि राष्ट्र की समृद्धि, औद्योगिकीकरण द्वारा उसके मानवीय एवं भौतिक साधनों के प्रभावशाली उपयोग पर निर्भर है।

भारत के विशाल मानव संसाधन शक्ति तब ही लाभप्रद हो

सकती है, जब शिक्षा प्राप्त करने के बाद रोजगार प्राप्त करने में भी सक्षम हो, इस आयोग ने व्यावसायिक, प्राविधिक और अभियंत्रिकी की शिक्षा पर बल देते हुए व्यावसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में कई सुझाव दिए।

इस आयोग ने कहा कि शिक्षा को उत्पादकता से जोड़ने के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर जोर दिया जाए।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत विभिन्न परिवारों ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में जीवकोपार्जन करने वाले किशोर-किशोरियों को व्यवसाय चयन संबन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन फैजाबाद शहर के सन्दर्भ में करने से ज्ञात हुआ है कि व्यावसायिक मार्गदर्शन की नितान्त आवश्यकता है, तथा व्यवसाय चयन हेतु आर्थिक सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण का प्रभाव किशोर-किशोरियों पर पड़ता है।

किशोर एवं किशोरियों में व्यवसायिक चयन हेतु व्यवसायिक पाठ्यक्रम की व्यवस्था होनी चाहिए इसके लिए शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले परिवार के लिए सिलाई-कड़ाई, कृषि, गृहविज्ञान पर आधारित कौशल शिक्षा पर आधारित पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

समस्या कथन

किसी भी समस्या पर कार्य करने के लिए समस्या का शीर्षक के रूप में संयोजित करना आवश्यक होता है। प्रस्तुत समस्या को शोध-छात्र ने निम्नलिखित शीर्षक से निबद्ध किया है -

"विभिन्न प्रकार के परिवारों का किषोर-किषोरियो में व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" (फैजाबाद (उ0प्र0) षहर के सन्दर्भ में)

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक चयन में परिवार की भूमिका निर्णायक होती है जो कि व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव द्वारा प्रभावित होती है। व्यक्तित्व विकास एवं व्यवसायिक चयन के क्रम में किशोर-किशोरियाँ बाल्य काल से सर्व प्रथप परिवारिक

वातावरण और उनसे प्रापत होने वाले गुणों के अनुभवों को प्राप्त करता है, परिवार में ही रहकर वह नैतिकता, उच्च आदर्शों, सामाजिकता आर व्यवहार को सीखता है। परिवार में प्रत्येक बालक को अपने व्यक्तित्व अर्थात् शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक विकास का पर्याप्त अवसर प्राप्त होता है। माता-पिता अपने बच्चे के पाल-पोषण के लिए जिस प्रकार के व्यवहार को अपनाते हैं उसी के अनरूप किशोर-किशोरियों के व्यक्तित्व विकास एवं व्यवसायिक चयन पर प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान तकनीक तथा जटिल पर्यावरण में परिवारिक स्वरूप बदल जाता है जिसका किशोर एवं किशोरियों के व्यक्तित्व विकास एवं व्यवसाय चयन पर प्रभाव पड़ रहा है इन्हीं प्रभावों के कारणों का अध्ययन करना ही इस शोध का महत्व है।

अध्ययन के उद्देश्य

विभिन्न परिवारों के किशोर-किशोरियों के व्यक्तित्व विकास एवं व्यवसायिक चयन को निर्धारित करने वाले प्रमुख तत्वों के अध्ययन के आधार पर शोध कार्य पूरा किया गया है।

1. विभिन्न परिवारों के किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक चयन सम्बन्धी प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक रूचि की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव तनाव की विमाओं का शिक्षण प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत शोध के सम्बन्ध में निमित्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निम्न परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जायेगा -

1. विभिन्न परिवारों के किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है।
2. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक चयन सम्बन्धी प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
3. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक रूचि की प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
4. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों के विषय-वस्तु ज्ञान में सार्थक अन्तर है।
5. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों की विशेषताओं में सार्थक अन्तर है।
6. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों के प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
7. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक शिक्षण की तैयारी में सार्थक अन्तर है।
8. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों के मार्ग दर्शन प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।
9. नगरीय परिवार एवं ग्रामीण परिवार के किशोर-किशोरियों के अन्तः वैयक्तिक सम्बन्ध में सार्थक अन्तर है।

प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण

प्रस्तुत लघु-शोध में शोधार्थी ने कुछ प्रमुख पदों का प्रयोग किया है। शोधार्थी ने इन पदों को निम्न अर्थो में लिया है -

नगरीय परिवार

फैजाबाद जनपद की सदर तहसील के अन्तर्गत नगर निगम के विभिन्न 5 वार्डों में निवास करने वाले किशोर-किशोरियों के परिवार का चयन शोध कार्य में प्रतिदर्श के रूप में किया गया है, जिनकी आर्थिक आय 2 लाख के ऊपर है।

ग्रामीण परिवारः

फैजाबाद जनपद की सदर तहसील के अन्तर्गत ग्रामसभा के 5 ग्रामों में निवास करने वाले किशोर-किशोरियों के परिवार का चयन शोध कार्य में प्रतिदर्श के रूप में किया गया है, जिनकी आर्थिक आय 2 लाख से कम है।

व्यवसायिक तनाव

तनाव एक बहुआयामी प्रक्रिया है, जो लोगों में वैसी घटनाओं या परिस्थितियों के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है, जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करता है। जब यह तनाव व्यवसाय के कारण उत्पन्न हो तो उसे व्यवसायिक तनाव कहते हैं।

व्यवसायिक-प्रभावशीलता

व्यवसायिक-प्रभावशीलता की विशेषताओं, उनके व्यवसायिक कार्य, उनके व्यवसायिक-प्रबन्धन, और उनके व्यवसायिक-शिक्षण के परिणामों पर उनके प्रभाव के बीच सम्बन्धों से सम्बन्धित है।

अध्ययन की परिसीमाएँ

उपरोक्त तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकत्र्ता ने अपनी समस्या को निम्नलिखित रूपों में सीमांकित किया है -

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल नगरीय क्षेत्र के वार्ड में निवास करने वाले किशोर-किशोरियों पर किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन में केवल फैजाबाद नगर के शहरी नगर निगम के अन्तर्गत 5 वार्ड- राठ हवेली, रिकाबगंज, साहबगंज, मुगलपुरा, लालबाग को लिया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में केवल फैजाबाद ग्रामीण क्षेत्र के अन्तर्गत 5 ग्राम- रानोपाली, आशापुर, शंकरगढ़, मोहबरा बाजार, जनौरा को लिया गया है।
4. इन 180 किशोर-किशोरियों में से 50 शहरी क्षेत्र के किशोर, 50 ग्रामीण क्षेत्र के किशोर, 40 शहरी क्षेत्र के किशोरियों, तथा 40 ग्रामीण क्षेत्र के किशोरियों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण

व्यावसायिक तनाव का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है। अब इस समस्या पर दिन-प्रतिदिन ध्यान देने की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। शिक्षक में व्यावसायिक तनाव और उसको प्रभावित करने वाले कारकों पर, अनेक अनुसंधान कर्ताओं ने भारत तथा विदेशों में अनुसंधान किये हैं

गुप्ता (1982) ने अपने शोध में 120 कामकाजी महिलाओं, जिनकी तीन श्रेणियाँ - स्कूली शिक्षिकाएँ, प्रवक्ता तथा मेडिकल कालेज की अध्यापिकाएँ थीं, में व्यावसायिक तनाव तथा उसका उनके वैवाहिक जीवन में समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। इस शोधकार्य में प्रमिला कपूर (1970) द्वारा निर्मित 'सूचना अनुसूची' नामक उपकरण मापनी का प्रयोग किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण में काई-वर्ग परीक्षण अपनाया गया। इन्होंने अपने शोध में निष्कर्ष रूप से पाया कि महिलाओं में व्यवसायिक तनाव, शिक्षा तथा आय उनकी वैवाहिक जीवन में समायोजन की क्षमता को प्रभावित करती है।

गुप्ता तथा मूर्ती (1984) ने "भारतीय महिलाओं में संघर्ष विश्लेषण तथा तनाव कम करने के उपाय पर अध्ययन किया।" अपने अध्ययन में संरचनात्मक साक्षात्कार अनुसूची द्वारा कार्य के प्रति समर्पण, जीवन संतुष्टि तथा भूमिका संघर्ष सम्बन्धी जानकारी ली। निष्कर्ष रूप से पाया गया कि भूमिका संघर्ष सम्बन्धी तनाव कामकाजी महिलाओं तथा गैर-कामकाजी महिलाओं, दोनों में पाया गया। वे महिलाएँ जो स्नातक एवं अनुभवी थी, उनमें जो स्नाततक नहीं थीं तथा जो परास्नातक थीं, की अपेक्षा कम भूमिका संघर्ष की स्थिति पायी गई। वे महिलाएँ जो अपने जीवन में एक साथ कई भूमिका अदा कर रही थी उनमें भूमिका संघर्ष अधिक पाया गया।

आटो (1986) ने अपने सर्वे में 16 विद्यालयों के 600 अध्यापकों का अध्ययन किया तथा पाया कि आस्ट्रेलिया अध्यापकों में उच्च व्यवसायिक तनाव पाया जाता है। ऐसी ही रिपोर्ट मंे अन्य देशों के अध्यापकों मंे पायी गयी। इन्होंने अपने अध्ययन में आगे यह भी बताया कि इनमें से आधे अध्यापक ऐसे थे जिन्होंने पिछले 12 महीने के अन्दर

अपने डॉक्टर से सलाह ली कि उन्हें कार्य सम्बन्धी समस्याओं में क्या करना चाहिए?

मिश्रा (1991) ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों में तनाव मंे संस्थागत संधर्ष तथा उनके व्यक्तित्व में बर्न आउट के बीच अंतः सम्बन्ध पर अध्ययन किया। 200 माध्यमिक स्कूल शिक्षकों पर 'रमीह' द्वारा निर्मित 'आर्गेनाइजेशनल कानफ्लिक्ट इन्वेन्टरी" को प्रशासित किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन के लिए माशलों द्वारा निर्मित 'बर्न आउट इन्वेन्टरी, रूटर द्वारा निर्मित 'आई-ई लोकस आॅफ कन्ट्रोल स्केल' तथा इन्हीं की खुलेशिरे वाली 'कोपिंग विहैवियर क्वेश्चनायर' का भी प्रयोग किया।

अनुसंधानकर्ता ने विश्लेषण में ।छव्ट।-परीक्षण तथा काई-वर्ग परीक्षण अपनाया तथा निम्न निष्कर्ष पाया गया कि व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकार तथा संस्था का प्रबन्धन तनाव सम्बन्धित व्यवहारको नियंत्रित करने तथा भूमिका संघर्ष को कम करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

नारंग (1992) ने दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं में भूमिका संघर्ष, जबावदेही का ज्ञान तथा व्यावसायिक संस्कृति का अध्ययन किया। शोधकत्र्ता ने अपने शोध में दिल्ली की म्यूनिसिपल कार्पोरेशन स्कूल की 250 विवाहित महिला अध्यापकों को चुना तथा इन पर 'संरचित साक्षात्कार अनुसूची' मापनी को प्रशासित किया। शोधकत्र्ता ने अपने शोध में निम्न निष्कर्ष प्राप्त कियें-

1. लगभग 50 प्रतिशत शिक्षिकाएँ ऐसी थीं जिन्हें शिक्षक की जिम्मेदारी के साथ-साथ घर-गृहस्थी की जिम्मदारी वहन करनी पड़ती थी।
2. 39 प्रतिशत महिलाओं ने शिकायत की थी कि उनके पति का व्यवहार उनके प्रति रूखा है।
3. इन महिला शिक्षिकाओं में से आधे ऐसी थी जो परास्नातक की योग्यता रखते हुए भी माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने से तनाव महसूस करती थीं।
4. शोरगुल युक्त कक्षा, असभ्य विद्यार्थी, विद्यालय का गिरता स्तर

आदि ऐसे कारण है जो शिक्षक मंे तनाव के कारण के रूप में पाया गया।

कापर तथा केली (1993) ने दिल्ली के माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षिकाओं में भूमिका संघर्ष, जबावदेही का ज्ञान तथा व्यावसायिक संस्कृति का अध्ययन किया। शोधकत्र्ता ने अपने शोध में इन कारकों का व्यावसायिक संतुष्टि तथा मानसिक स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव को पाया। व्यावसायिक असंतुष्टि के कारण के रूप में अत्यधिक कार्य-भार को (26 प्रतिशत) एक प्रमुख कारक के रूप में पाया गया। व्यावसायिक तनाव के मुख्य कारकों में अत्यधिक कार्यभार, संसाधनों में कमी, निषेध से उत्पन्न समस्या को सामान्य स्रोत के रूप में पाया गया।

अनुसंधान विधियाँ

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का शीर्षक "विभिन्न प्रकार के परिवारों का किशोर-किशोरियो में व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" (फैजाबाद (उ0प्र0) शहर के सन्दर्भ में) है। वर्तमान समय की समस्याओं के अध्ययन के लिए विवरणात्मक सर्वेक्षण विधि ही उपयुक्त होती है, क्योंकि सर्वेक्षण के अन्तर्गत अध्ययन के लिए सम्भाव्यता सिद्धान्त के आधार पर प्रतिदर्श का चयन किया गया है। जनसंख्या के प्रतिदर्श द्वारा शैक्षिक क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्या के बारे में ऐसे प्रतिनिधि आकड़े संकलित किये जा सकते है, जो सम्बन्धित समष्टि के स्वरूप को लगभग पूर्णरूपेण प्रतिबिम्बित करते है। ऐसे वैज्ञानिक प्रतिचयन पर आधारित अध्ययनों को सर्वेक्षण अनुसंधान की संज्ञा दी जाती है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में शोधार्थी ने विवरणात्मक सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का शीर्षक "विभिन्न प्रकार के परिवारों का किशोर-किशोरियो में व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" (फैजाबाद (उ0प्र0) शहर के सन्दर्भ में) है। अतः शोधार्थी ने एक क्षेत्र विशेष फैजाबाद जनपद के शहरी एवं गा्रमीण के कुल 180 किशोर-किशोरियों को अपने शोध-प्रबन्ध की प्रतिदर्श के रूप में चयन किया है।

प्रतिदर्शन विधि

प्रतिदर्श समग्र इकाइयों का वह अंश है, जो पूर्ण समग्र के अध्ययन विश्लेषण एवं निष्कर्ष हेतु चुना जाता है। इस चुनने की प्रक्रिया को प्रतिदर्शन कहा जाता है। प्रतिदर्श में प्रतिनिधित्व एवं प्रर्याप्तता का गुण होना चाहिए। प्रतिदर्श की प्रकृति एवं विशिष्टता के आधार पर प्रतिदर्शन की अनेक विधियाँ हो सकती है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में शोध छात्रा ने प्रतिदर्श के गुणांें को ध्यान में रखते हुए स्तरीकृत यादृच्छिक प्रति चयन विधि का प्रयोग किया है, जो सम्भाव्य प्रतिदर्शन का एक प्रकार है।

अध्ययन का प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध मे शोधकत्रा ने स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि का प्रयोग कर अध्ययन के प्रतिदर्श का चयन किया है। शोधकत्रा ने सम्बन्धित जनसंख्या से प्रतिदर्श का चयन करने हेतु फैजाबाद जनपद के 5 नगरीय क्षेत्र एवं 5 ग्रामीण परिवारों के 180 किशोर-किशोरियों की सूची प्राप्त की। इस सूची के समस्त किशोर-किशोरियों को निम्न चार वर्गों में विभाजित कर सूची बना ली गयी।

1. शहरी क्षेत्र के किशोर,
2. ग्रामीण क्षेत्र के किशोर,
3. शहरी क्षेत्र के किशोरियाँ,
4. शहरी क्षेत्र के किशोरियाँ

पुनः प्राप्त सूची से यादृच्छिक विधि से 50 शहरी क्षेत्र के किशोर, 50 शहरी क्षेत्र के किशोरियाँ, 40 ग्रामीण क्षेत्र के किशोर, 40 ग्रामीण क्षेत्र के किशोरियाँ का चयन किया गया।

शहरी क्षेत्र के किशोर	ग्रामीण क्षेत्र के किशोर	शहरी क्षेत्र की किशोरियाँ	ग्रामीण क्षेत्र की किशोरियाँ
50	40	50	40

प्रयुक्त उपकरणों का विवरणः

अनुसंधान कार्य में शोध समस्या से सम्बन्धित तर्कसंगत आकड़ों की आवश्यकता होती है ताकि सम्बन्धित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जा सके। समस्या से सम्बन्धित आकड़ों को संकलित करने के लिए जिन साधनों का प्रयोग किया जाता है, उसे उपकरण कहा जाता है। अनुसंधान कार्य की प्रासंगिता बनाए रखने के लिए शोधकत्र्ता को विश्वसनीय एवं वैध उपकरणों का प्रयोग आवश्यक होता है। प्रस्तुत शोध के अध्ययन के उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं के अनुसार सूचनाओं के संग्रह हेतु निम्न लिखित उपकरणों का प्रयोग शोधकर्ता ने किया है-

व्यवसायिक तनाव सूचकांक

प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के किशोर एवं किशोरियों में व्यवसायिक तनाव के मापन के लिए डा0 ए0 के0 श्रीवास्तव एवं डा0 ए0 पी0 सिंह द्वारा निर्मित 'आक्युपेशनल स्ट्रेश इन्डेक्स' (व्ग्ैण्ण्) का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण में व्यावसायिक तनाव से सम्बान्धित 46 कथन दिये गये हैं, जो निम्नलिखित क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1. अत्याधिक कार्य भार,
2. संदिग्ध भूमिका,
3. भूमिका संघर्ष,
4. गैर जिम्मेदार समूह तथा राजनैतिक दबाव,
5. व्यक्ति के उत्तर दायित्व,
6. भागीदारी,
7. अधिकारों की कमी,
8. खराब समवयस्क सम्बन्ध
9. योग्यता से कम महत्व,
10. निम्न स्तर,
11. तनाव पूर्ण काम की परिस्थितियाँ,
12. अलाभ की स्थिति,

उपकरण की विश्वसनीयता को भिन्न-भिन्न विधियों से ज्ञात किया गया है। उपकरण की विश्वसनीयता को निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित किया गया है।

क्रम संख्या	विधि	विश्वसनीयता
1-	अर्द्ध-विच्छेद विधि (सम-विषम)	0-935
2-	क्रानबैक की अल्फा कोफिसियेन्ट विधि	0-90

उपकरण निर्माण कर्ता ने उपकरण की वैधता ज्ञात करने के लिए निष्कर्ष वैधता विधि का प्रयोग किया। उपकरण की वैधता ज्ञात करने के लिए विभिन्न व्यावसायिक अभिवृत्तियों तथा व्यावसायिक व्यवहार परीक्षणों से प्राप्त परिणाम तथा ओ0 एस0 आई0 परीक्षण से प्राप्त परिणामों के बीच सह सम्बन्ध निकाला गया जो धनात्मक रूप से सह-सम्बान्धित थे।

व्यवसायिक प्रभाव शीलता मापनी

व्यवसायिक प्रभावशीलता के मापन के लिए डॉ उमे कुलसुम द्वारा निर्मित 'टीचर इफेक्टिवनेस स्केल' का प्रयोग किया गया है। इस मापनी में कुल 60 कथन दिये गये है जो निम्न पाँच बीमाओं में विभक्त है।

1. शिक्षण की तैयारी तथा योजना
2. कक्षा-कक्ष प्रबन्धन,
3. विषय वस्तु का ज्ञान,
4. शिक्षक की विशेषताएँ,
5. अन्तः वैयक्तिक सम्बन्ध

उपकरण की विश्वसनीयता निम्न सारणी द्वारा प्रदर्शित की गयी है-

क्रम संख्या	विधि	सहसम्बन्ध	विश्वसनीयता सूचकांक
1-	अर्द्ध-विच्छेद विधि	0-68	x_{tt} = 0-82
2-	परीक्षण-पुनर्परीक्षण	0-63	x_{tt} = 0-79

	विधि		

उपकरण की वैधता ज्ञात करने के लिए निष्कर्ष वैधता परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया। व्यवसाय की प्रभावशीलता से सम्बन्धित प्रधानाचार्य की रेटिंग तथा इस परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांक के बीच सम्बन्ध निकाला गया तथा देखा गया कि दोनों में उच्च सहसम्बन्ध पाया गया। इस विधि से परीक्षण का वैधता गुणांक 0.85 पाया गया।

उपकरणों का प्रशासन

व्यावसायिक तनाव मापन हेतु डॉ0 ए0के0 श्रीवास्तव तथा डॉ0 ए0पी0 सिंह द्वारा निर्मित 'आक्यूपेशनल स्ट्रेस इन्डेक्स' (व्ैप्) मापनी को प्रयोज्य पर प्रशासित किया गया। प्रशासन के समय प्रयोज्य को निर्देश दिये गये कि यह प्रश्नावली एक मनोवैज्ञानिक जांच के उद्देश्य से दी जा रही है। इसमें आपके कार्य वातावरण से सम्बन्धित कुछ कथन दिये गये हैं। प्रत्येक कथन के सामने पांच सम्भावित उत्तर दिये गये हैं। आपकी नौकरी अथवा संगठन विभाग के सन्दर्भ में जो भी उत्तर ठीक लगे उसके नीचे रेखा खींच दीजिए। प्रत्येक कथन के लिए पांच सम्भावित उत्तरों में से ही उत्तर देना है। उन्हें विश्वास दिलाया जाता कि आपके उत्तर पूर्ण गोपनीय रखे जायेंगे।

प्रदत्तों का संग्रह

उपरोक्त उपकरणों के प्रशासन के द्वारा प्रदत्तों का संग्रह किया गया। 'आक्यूपेशनल स्ट्रेश इण्डेक्स' मापनी के कथनों की प्रकृति सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार की थी। प्रत्येक कथन के पांच सम्भावित उत्तर थे। सकारात्मक कथनों के फलांकन के समय प्रत्येक पूर्ण असहमत के लिए 1-अंक, प्रत्येक असहमत के लिए 2-अंक, प्रत्येक अनिश्चित के लिए 3-अंक, प्रत्येक सहमत के लिए 2-अंक, प्रत्येक सहमत के लिए -4 अंक तथा प्रत्येक पूर्ण सहमत के लिए 5-अंक प्रदान किये गये। प्रत्येक नकारात्मक कथनों में फलांकन की ठीक विपरीत स्थिति अपनायी गयी। इस प्रकार प्रत्येक उत्तर को अंक प्रदान कर उन्हें जोड़ लिया गया। यह जोड़ ही उस व्यक्तिगत के व्यावसायिक तनाव के प्राप्तांक

माने गये।

व्याख्या एवं विश्लेषण

सारणी संख्या 1.1 शहरी माध्यमिक विद्यालयों के किशोर एवं ग्रामीण विद्यालयों के किशोर के व्यवसाय प्रबन्धन सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक-विचलन तथा ज.मान) का मान

क्र. सं.	चर	संख्या (छ)	मध्य मान (ड)	मानक विचलन	tमान	सार्थकता स्तर.05
1-	शहरी विद्यालय के किशोर	50	63-24	5-23	5-858	सार्थक
2-	ग्रामीण विद्यालय के किशोर	40	57-75	3-64		

सारणी सं0 4.5 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ज. का परिकलित मान 5.858 है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 88 पर ज.परीक्षण के सारणी मान 1.99 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{05}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_5) को स्वीकृत किया जाता है, अर्थात् शहरी माध्यमिक विद्यालयों के किशोर एवं ग्रामीण विद्यालय की किशोर के व्यवसाय प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।

H_6 =शहरी माध्यमिक विद्यालयों की किशोरियों एवं ग्रामीण विद्यालय की किशोरियों के व्यवसायिक ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

H_{06} = शहरी माध्यमिक विद्यालयों की किशोरियों एवं ग्रामीण विद्यालय की किशोरियों के व्यवसायिक ज्ञान में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

सारणी संख्या 1.2 शहरी माध्यमिक विद्यालयों की किशोरियों एवं ग्रामीण

विद्यालय की किशोरियों के व्यवसायिक ज्ञान सम्बन्धी प्राप्तांकों (मध्यमान, मानक-विचलन तथा ज.मान) का मान

क्र. सं.	चर	संख्या (छ)	मध्यमान (ड)	मानक विचलन	t-.मान	सार्थकता स्तर .05
1-	"शहरी विद्यालय की किशोरियाँ	50	48-84	5-86	3-137	सार्थक
2-	ग्रामीण विद्यालय की किशोरियाँ	40	41-95	7-77		

सारणी सं0 4.6 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ज. का परिकलित मान 3.137 है, जो कि सार्थकता स्तर 0.05 तथा मुक्तांश 88 पर ज.परीक्षण के सारणी मान 1.99 से अधिक है अर्थात् मध्यमानों में सार्थक अन्तर है। अतः शून्य परिकल्पना (H_{06}) अस्वीकृत तथा शोध परिकल्पना (H_{60}) को स्वीकृत किया जाता है, अर्थात् शहरी माध्यमिक विद्यालयों की किशोरियाँ एवं ग्रामीण विद्यालय की किशोरियों के व्यवसायिक ज्ञान में सार्थक अन्तर है।

सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध जिसका शीर्षक "विभिन्न प्रकार के परिवारों का किशोर-किशोरियो में व्यवसायिक चयन सम्बन्धी तनाव की स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" (फैजाबाद (उ0प्र0) षहर के सन्दर्भ में) है। प्रस्तुत शोध में पाया गया कि समाज में हो रहे तीव्र सामाजिक परिवर्तन ने गा्रमीण एवं शहरी परिवार के किशोर-किशोरियों में व्यवसायिक चयन को प्रभावित किया है। आज हम जिस युग मंे जी रहे हैं उसमें दिन-प्रतिदिन जटिलताएँ बढ़ती जा रहीं हैं। किशोर-किशोरियाँ भी इन

समस्याओं से अछूता नहीं रह सका है। जिस प्रकार जीवन के हर क्षेत्र में तनाव दिन-प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। किशोर-किशोरियों में व्यवसायिक तनाव की अधिकता, व्यवसायिक चयन की प्रभावशीलता को प्रभावित करती है। तनाव के कारण किशोर-किशोरियाँ अपना सर्वोत्तम व्यवसाय चयन करने में असमर्थ हो जाता है। ये समस्याएँ जिन किशोर-किशोरियों में पायी जाती हैं उनमें अपने व्यवसाय के प्रति प्रतिकूल तथा अस्वस्थ्य मनोवृत्ति का विकास हो जाता है। अतः प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अध्ययन किया गया -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. माध्यमिक विद्यालयों के किशोर-किशोरियों के तनाव का व्यवसायिक प्रभावशीलता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु शोध कार्य में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों के व्यवसायिक तनाव में सार्थक अन्तर है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक-प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण किशोर-किशोरियों के व्यवसाय की तैयारी में सार्थक अन्तर है।
5. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण शिक्षकों के व्यवसाय प्रबन्धन में सार्थक अन्तर है।
6. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण शिक्षकों के व्यवसाय ज्ञान

में सार्थक अन्तर है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शोधकत्र्ता ने स्तरित यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग कर, फैजाबाद शहर के माध्यमिक विद्यालयों में से 180 शहरी/ग्रामीण विद्यालय के किशोर-किशोरियों को प्रयोज्य के रूप में लिया। जिनमें व्यवसायिक तनाव मापन के लिए डॉ0 ए0के0 श्रीवास्तव तथा डॉ0 ए0पी0 सिंह द्वारा निर्मित 'आक्यूपेशनल स्ट्रेस इन्डेन्स' (व्ैप्) तथा किशोर-किशोरियों की प्रभावशीलता के मापन के लिए डॉ0 उमें कुलसुम द्वारा निर्मित 'टीचर इफेक्टिवनेस स्केल' का प्रयोग किया गया, जिनकी वैधता एवं विश्वसनीयता उच्च थी।

अध्ययन के परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षणों के प्रशासन से प्राप्त आंकड़ों की सांख्यिकीय विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए -

1. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण विद्यालयों के किशोर के व्यवसायिक तनाव में अन्तर था।
2. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण विद्यालयों की किशोरियों के व्यवसायिक तनाव में अन्तर नहीं था।
3. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण विद्यालयों के किशोर की व्यवसायिक-प्रभावशीलता में अन्तर था।
4. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण विद्यालयों के किशोरों की व्यवसाय की तैयारी में अन्तर था।
5. माध्यमिक विद्यालयों के शहरी/ग्रामीण विद्यालयों के किशोरों के व्यवसाय प्रबन्धन में अन्तर था।

परिणामों की व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि ग्रामीण विद्यालय के किशोर-किशोरियों में शहरी विद्यालय के किशोर-किशोरियों की अपेक्षा अधिक व्यावसायिक तनाव पाया गया। इसका कारण ग्रामीण विद्यालय के किशोर-किशोरियों में कार्य संतुष्टि, अत्यधिक कार्यभार, आदि हो सकते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि शहरी/ग्रामीण विद्यालयों की

किशोरियों के व्यावसायिक तनाव में अन्तर नहीं था।

अध्ययन के परिणाम में यह भी पाया गया कि ग्रामीण विद्यालय के किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक-प्रभावशीलता शहरी विद्यालय के किशोर-किशोरियों की प्रभावशीलता से कम थी। शोधकत्र्ता ने यह पाया कि ग्रामीण विद्यालय के किशोर-किशोरियाँ जिनमें व्यावसायिक अनुभव की पर्याप्त कमी थी, के कारण इस प्रकार के परिणाम सामने आये।प्रभावशीलता के विभिन्न आयामों में शहरी विद्यालय के किशोर की प्रभावशीलता ग्रामीण विद्यालय के किशोर की प्रभावशीलता से अधिक पायी गई, लेकिन ग्रामीण विद्यालय के किशोरों में व्यावसायिक तैयारी शहरी विद्यालय के किशोरों की अपेक्षा अधिक पायी गयी।

शहरी विद्यालय के किशोर-किशोरियों में उपस्थित व्यावसायिक चयन सम्बन्धी तनाव का उनकी व्यवसायिक प्रभावशीलता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में भी पाया गया कि उच्च व्यवसायिक तनाव की उपस्थिति में किशोर-किशोरियों की व्यवसायिक प्रभावशीलता कम हो जाती है। इसी प्रकार तनाव एवं प्रतिबल सम्बन्धी शोध में डॉ0 टी0सी0 ज्ञानानी (1998) में पाया कि "उच्च शिक्षा में संलग्न शिक्षकों के कार्य पर तनाव एवं प्रतिबल का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अध्ययन के परिणाम स्वरूप यह भी पाया गया कि शहरी/ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न परिवार के अध्यनरत माध्यमिक विद्यालयों के किशोर-किशोरियों में व्यवसायिक चयन सम्बन्धित तनाव और प्रभावशीलता में अन्तर था।

सन्दर्भ ग्रन्थ-सूची

1. *गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अल्का (2007) आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
2. *गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अल्का (2007) सांख्यिकीय विधियाँ, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
3. *गुप्ता, एस0पी0 तथा गुप्ता, अल्का (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।*
4. *मिश्रा, के0एस0 (1993) टीचर्स एण्ड देयर एजुकेशन, अम्बालाः*

द एशोसिएटेड पब्लिशर्स।

5. आटो, आर0 (1986) अ स्टडी आन टीचर अण्डर स्ट्रेश, मेलबोर्न; हिल आॅफ कान्टेन्ट पब्लिशिंग।
6. मिश्रा, के0एन0 (1991) इण्टर रिलेशनशिप बिटवीन आर्गेनाइजेशनल कान्फ्लिक्ट इन स्कूल टीचर स्टेªश एण्ड बर्न आउट इन रिलेशन टू टीचर्स पर्सनालिटी एट प्राइमरी लेवल, इन एम0बी0बुच (एजु0), फिफ्थ सर्वे आॅफ एजुकेशनल रिसर्च, वाल्यूम-प्प्, पृ0-908, नई दिल्ली, एनसी0ई0आर0टी0।
7. नारंग, संध्या (1992) अ स्टडी आन वूमन प्राइमरी टीचर्स इन देलही: देयर रोल कान्फ्लिक्ट, परसेप्सन आॅफ एकाउण्टेबिलिटी एण्ड प्रोफेशनल कल्चर, इन एम0बी0बुच (एजु0), फिफ्थ सर्वे आफ एजुकेशनल रिसर्च, वालयू-प्प्, पृ0-1461, न्यू देलही, एन.सी.ई.आर.टी.।